कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ----------

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ----------

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☑

विषय हिन्दी

परीक्षा का दिन शुक्रवार

दिनांक 16-3-19

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .....संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है।165/2019

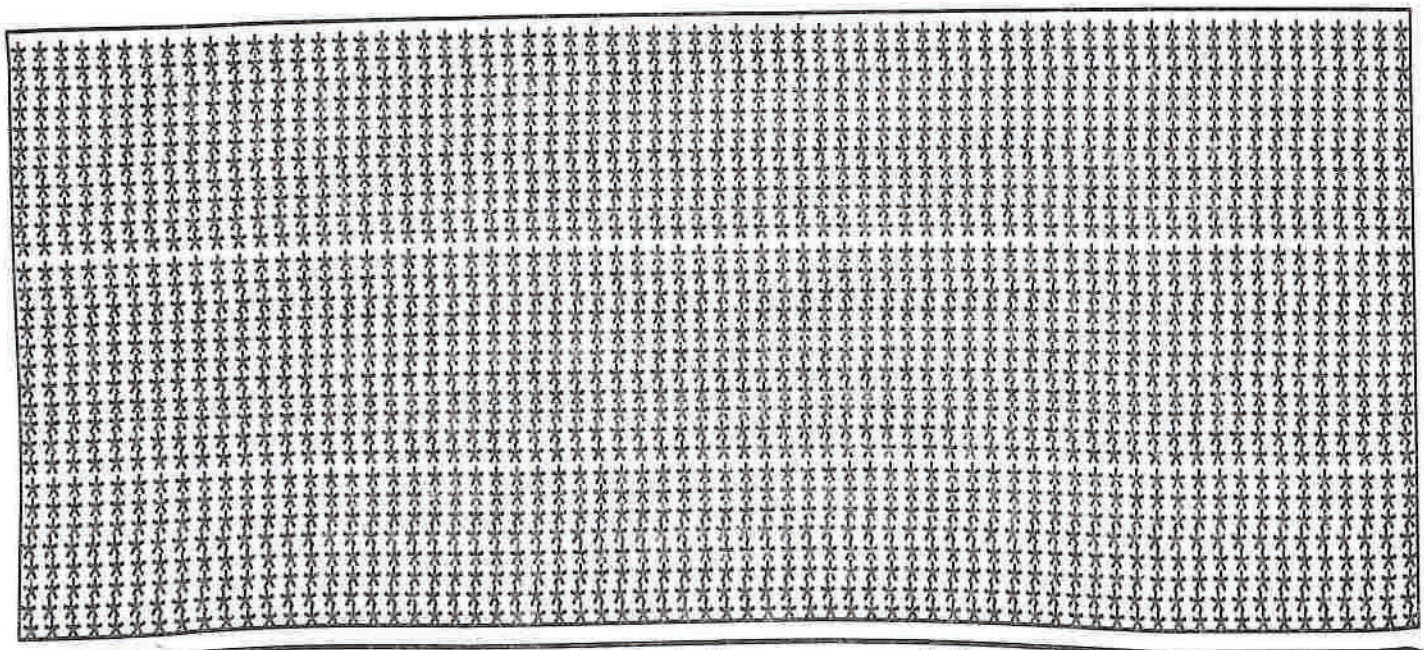

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

"खण्ड - 1"

अपठित गद्यांश :-

1. शीर्षक → नारी - शक्ति का महत्व।

2. आधुनिक काल में भी नारियों ने हर क्षेत्र में योगदान दिया है। वह शिक्षा के प्रचार - प्रसार से पूरी तरह आत्मविश्वास से भर गई। शिक्षा ने उसे बहुत सबल बना दिया।

3. आधुनिक नारियों में जैसे भीकाजी कामा, सरोजिनी नायडू, अरुणा असफ अली, कैप्टन सहगल ने आजादी आन्दोलन में काफी योगदान दिया। वे अपने परिवार की चिन्ता न किए बिना आजादी की लड़ाई लड़ने लगी। चाहे वो नारी किसी भी धर्म, जाति से संबंधित थी फिर भी वह पुरुषों के से कंधों से कंधे मिलाकर संघर्ष करने लगी।

अपठित पद्यांश :-

4. कवि ने सूरज एवं पवन से प्रार्थना की है कि वे दोनों बेखबर एवं सपनों में डूबे हुए लोगों को जगाएँ। सूर्य तो उसके प्रकाश के द्वारा एवं पवन (हवा) उसके वेग (गति) के द्वारा आलस्य से युक्त व्यक्तियों को जगाएँ।

5. जो व्यक्ति समय पर सचेत नहीं होता है वह वक्त पर जागने वाले लोगों से कोसों दूर रह जाता है। वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में असमर्थ हो जाता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

इसीलिए अपने निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आदमी को उचित समय पर जागना आवश्यक है।

6. घबरा के भागने वाला व्यक्ति बेवक्त सजग होने वाला व्यक्ति होता है किंतु क्षिप्र गति वाला व्यक्ति उचित समय पर उठने वाला व्यक्ति होता है। घबरा के भागने से व्यक्ति अपने लक्ष्य को अर्जित नहीं कर पाता, किंतु क्षिप्र गति से वाला व्यक्ति पूर्णतया सजग होकर अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेता है।

"खण्ड - 3"

9. क्रिया → शब्द के जिस रूप से किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं।
जैसे:- राम खाना खाता है।
इस वाक्य में "खाता है।" क्रिया शब्द है।

कर्म के आधार पर क्रिया के भेद
इसके आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं:-
(1) अकर्मक क्रिया (2) सकर्मक क्रिया

* अकर्मक क्रिया → इस क्रिया को संपादित करने के लिए किसी कर्म की आपश्यकता नहीं होती।
* सकर्मक क्रिया → इस क्रिया को संपादित करने के लिए किसी कर्म की आवश्यकता होती है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

10. कारक → दिये गए वाक्य में कारक निम्नानुसार है:-
(1) पत्र → कर्ता कारक
(2) मोहन के द्वारा → करण कारक

काल → वाक्य में भूतकाल है।

वाच्य → वाक्य में कर्म की प्रधानता होने से कर्मवाच्य है।

11. गजानन → गज है के समान है आनन जिसका (गणेश)
इस शब्द में बहुव्रीहि समास है।

इस समास की विशेषताएँ → बहुव्रीहि समास में दोनों पदों (प्रथम तथा उत्तर) की प्रधानता न होकर किसी अन्य पद की प्रधानता होती है। यहाँ गणेश शब्द की प्रधानता है।

12. वाक्य शुद्धि :-

(क) मुझे अभी जाना है।
(ख) मेरे पास केवल / मात्र पचास रुपये हैं।

13. मुहावरे :-

(क) अगर-मगर करना → बहाने बाज़ी करना।
(ख) आपे से बाहर होना → वश में न रह पाना, अत्यन्त क्रोधित होना।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(14) अंधेर नगरी चौपट राजा → अयोग्य प्रशासन होना।

"खण्ड - 4"

(15)-(a) प्रसंग → प्रस्तुत पद्यांश हमारी 'क्षितिज' नामक हिंदी की पाठ्यपुस्तक के कवि देव सूरदास द्वारा रचित पदों से लिया गया है। इस पद्यांश में कृष्ण का और राधा के मिलन का वर्णन है।

व्याख्या → कवि सूरदास वर्णन करते है जब श्रीकृष्ण पहली बार राधा को देखते है तो उनके मन मे उनसे मिलने की इच्छा जागती है और वे राधा से पूछते है कि हे गोरी (लड़की)। तुम कौन हो? कहाँ रहती हो? किसकी बेटी हो? मैंने तुम्हे ब्रज की गलियों में कभी-भी नही देखा है। तब राधाजी श्रीकृष्ण को प्रत्युतर देती हुई कहती है कि मुझे ब्रज की गलियों में आने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मैं तो अपने द्वार पर ही खेलती रहती हूँ। हाँ, एक बात अपने कानों से सुनती रहती हूँ कि कोई नन्द का पुत्र दही और मक्खन की चोरी करता है। यह बात सुनकर श्रीकृष्ण सकपका जाते है और कहते है कि चलो मैं दही और मक्खन की चोरी करता हूँ लेकिन तुम्हारें पास तो ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे मैं चुरा सकूं। चलो हम दोनों तो साथ-साथ खेलने चलते है। सूरदास कहते है कि उनके आराध्य श्रीकृष्ण बहुत रसिक है। उन्होंने भोली-भाली राधा को अपनी बातों में उलझा

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

लिया है।

विशेष :- (1) भाषा बहुत सरल, सुबोध एवं प्रवाहपूर्ण है।
(2) साहित्यिक ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।
(3) राधा व्याज-स्तुति करने में काफ़ी माहिर है।
(4) श्रीकृष्ण ~~वास्तव~~ वास्तव में 'रसिक शिरोमणि' है।

(16-ii) प्रसंग → प्रस्तुत गद्यांश हमारी 'क्षितिज' नामक हिंदी की पाठ्यपुस्तक के लक्ष्मीनारायण रंगा द्वारा रचित 'अमर शहीद' एकांकी से उद्धृत है। इस गद्यांश में एक सेनानी का वर्णन है कि वह जो कभी भी अपने लिए नहीं जीता है। उसका जीवन हमेशा दूसरों के लिए होता है।

व्याख्या → लेखक वर्णन करता है कि स्वतन्त्रता सेनानी एक माली के समान होता है। माली आम का बाग लगाता है। वह यह जानता है कि ~~इस~~ इन पेड़ों के फल उसे प्राप्त नहीं होंगे, लेकिन फिर वह इन पेड़ों को कठिन परिश्रम से बोता है, उन्हें पानी देता है ताकि आने वाली पीढ़ी इन अमृत रूपी फलों का आनन्द ले सके। सागरमल गोपा भी एक संघर्षरत सेनानी है वह जेलर करणीदान को ये सब बातें कहता है। इसके अतिरिक्त वह एक बात और कहता है कि भागीरथ गंगा को इस धरती पर स्वयं के लिए नहीं लाया था वह गंगा को इसी उद्देश्य से धरती पर लाया था ताकि व्यक्ति उस गंगा का पानी पीकर अपनी प्यास शांत कर सके। इसी प्रकार स्वतंत्रता सेनानी भी अपने लिए देश को स्वतंत्र कराने की अपेक्षा वह दूसरों के लिए अपने प्राण न्योछावर करता है। वह चाहता है कि उसके आगे आने वाली पीढ़ी

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न टिप्पणी | परीक्षार्थी उत्तर

गुलामी की बेड़ियों में बँधी न रहे।

विशेष :- (1) भाषा अतीव सरल एवं बोधगम्य है।
(2) स्वतंत्रता सेनानी वास्तव में ही अपने लिए जीवन न जीकर दूसरों के लिए जीता है।

(17) 'प्रभो!' कविता कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित एक बहुत प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय कविता है। इस कविता में कवि ने ईश्वर की मनोहारिणी लीलाओं का इस प्रकृति में घट रही घटनाओं से सम्बन्ध व्यक्त किया है। कवि ने बताया है कि यदि किसी भी व्यक्ति को ईश्वर के प्रकाश अथवा तेज को देखना है तो वह चन्द्रमा से छिटक रही चाँदनी को देख सकता है। और यह जग में घट रही सभी घटनाएँ उसी की मनोहारी क्रीडाएँ हैं। यदि किसी व्यक्ति को ईश्वर की दया के बारे में जानना है तो वह सागर के विस्तार को देख सकता है। ये समुद्र में उठ रही लहरें उसी की प्रशंसा का स्वरूप हैं। यदि किसी व्यक्ति को ईश्वर की मुस्कान देखनी हो तो वह चन्द्रमा का अवलोकन कर सकता है इसी प्रकार कवि ने नदियों के कल-कल ध्वनि को ईश्वर की निनाद के समान बताया है। कवि ने उसे 'प्रेममय प्रकाश' तथा 'प्रकृति रूपी कमलिनी का अंशुमाली' बताया है। कवि ने ईश्वर को सब पर दया करने वाला बताया है। इस प्रकार इस पूरी कविता के द्वारा कवि ने ईश्वर की सर्वव्यापकता एवं उसकी लीलाओं

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

का वर्णन किया हैं।

(18)-1. लोक संत पीपा का जन्म झालावाड़ के गागरौन में 1590 वि.स. खीचीं राजवंश में हुआ था। वे एक योग्य शासक थे एवं प्रजा के चहेते भी थे। संत पीपा ने एक बार रामानन्द गुसाईं नामक गुरु से मिलने की इच्छा प्रकट की लेकिन गुरु रामानंद ने उनसे मिलने से इन्कार कर दिया। इस बात से प्रभावित हो पीपा ने अपना राज - काज त्याग दिया एवं गुरु के चरणों में आ गिरे। तब गुरु रामानंद ने उन्हे इस भव - सागर से पार होने का एकमात्र साधन बताया- राम-नाम जपना।

संत पीपा पहले मूर्ति-पूजा मे विश्वास रखते थे ~~लेकिन बाह~~ तथा देवी दुर्गा के उपासक थे। लेकिन रामानंद के विचारों से प्रभावित हो वे निर्गुणोपासक हो गए। वे राम - नाम को ही सर्वोपरि मानने लगे। वे सँत होने के साथ-साथ समाज सुधारक भी थे। उन्होनें मांस - भक्षण का काफी विरोध किया। वे समाज में प्रचलित कुरीतियों, बाह्याडंबरों का भी काफी विरोध करते थे। उन्होने परनिंदा से भी दूर रहने की शिक्षा दी। इसके साथ ही वे अपने शिष्यों को अच्छी सलाह देते थे तथा विरोधियों से बहस नहीं करते थे। इस प्रकार वे एक लोक संत होने के साथ ही समाज सुधारक थे।

आहू और कालीसिंध नदियों के संगम पर बने जल - दुर्ग ही इनका समाधि -स्थल रहा हैं। इनकी मृत्यु 1670 वि.सं. को हुई।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(19) उपर्युक्त सोरठे के माध्यम से कवि कृपाराम खिड़िया हमें संदेश देना चाहते हैं कि कोयल अपनी मधुर वाणी से सबको बहुत प्रसन्न करती है तथा सबको मन्त्रमुग्ध कर देती है। और कौवा अपनी कर्कश काँव-काँव से सबको बहुत तकलीफ़ देता है।
तो इस सोरठे के माध्यम से कवि ने वाणी के महत्व को बतलाया है कि हमें भी कोयल की तरह मधुर एवं स्वच्छ वाणी का प्रयोग करना चाहिए। यह वाणी कभी किसी को तकलीफ़ न दे।

(20) 'मातृ-वंदना' कविता में कवि ने मातृभूमि के प्रति अपने असीम प्रेमभाव को दर्शाया है। इस कविता में के द्वारा कवि अपने सभी-स्वार्थों को मातृभूमि के चरणों में अर्पित करना चाहता है। कवि मातृभूमि पर आने वाले सभी संकटों को दूर करना चाहता है। वह मातृभूमि से प्रार्थना से करता है कि वह उसे इतनी शक्ति दे, ताकि वह मातृभूमि पर होने वाले प्रहारों को झेल सके। कवि अपनी मेहनत से अर्जित सभी वस्तुएँ मातृभूमि को अर्पित करना चाहता है। यही इस कविता का वर्ण्य-विषय भी है।

(21) 'कन्यादान' कविता में माँ के द्वारा अपनी बेटी को दिए गए संदेश वर्तमान में काफी प्रासंगिक हैं। माँ अपनी बेटी को दैनिक-जीवन में उपयोगी काफी बातें बताती है। वह लड़की को अपने रूप पर न रीझने, विपत्ति आने पर आत्महत्या करने की न सोचने तथा गहनों और वस्त्रों के लालच में न पड़ने की शिक्षा

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

देती है क्योंकि ये सब स्त्री-जीवन के बंधन के समान होती हैं। इस प्रकार यह कविता वास्तव में काफी प्रासंगिक एवं महत्वपूर्ण है।

(22) लेखक ने अपना नाम अमर रखने के लिए सर्वप्रथम देवालय बनाने का विचार किया, किन्तु उसे इस विचार को त्यागना पड़ा। क्योंकि जब उसने भारत में उत्तरोत्तर बढ़ रही पाश्चात्य संस्कृति के बारे में विचार किया तो उसने सोचा कि यदि यह अंग्रेजी-शिक्षा भारत में ऐसे ही प्रचलित रही तो देवालय की तरफ कोई मुँह उठाकर भी नहीं देखेगा। और उसको यश के स्थान पर शुद्ध अपयश प्राप्त होगा।

(23) "भारत प्रकृति का खुबसूरत उपहार है।" इस बात का प्रमाण हमें मोहन राकेश द्वारा रचित आखिरी चट्टान पाठ के आधार पर मिल जाता है। इस पाठ मे लेखक ने भारत के दक्षिण में स्थित कन्याकुमारी का बहुत सुरम्य वर्णन किया है। कन्याकुमारी मे स्थित सैंडहिल, विवेकानन्द - शिला, नारियल के वृक्षों के झुरमुट इसकी शोभा को बढ़ाते हैं। अ यहाँ के सुर्योदय एवं सूर्यास्त का कविने काफी अच्छे तरीके से वर्णन किया हैं। अतः यह उक्ति वास्तव में भारत के लिए काफी सटीक हैं।

(24) संत दादू ने अपने शिष्यों को बहुत उपयोगी शिक्षाएँ दी हैं। उन्होनें उनकों परनिंदा से दुर रहने तथा आपस में प्रेम भाव रखने की शिक्षा दी हैं। दादू

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

ने इसके अलावा भी अनेक शिक्षाएँ दी है कि हमें किसी भी व्यक्ति से भेदभाव नही करना चाहिए क्योंकि इस संसार में जन्में सभी लोग ईश्वर की ही संताने हैं। इस आत्मा में ही परमात्मा का निवास हैं। दादू ने व्यक्तियों को जात-पाँत में से विश्व दूर रहने का संदेश दिया हैं। और ये सभी शिक्षाएँ वर्तमान में अभी उपयुक्त हैं।

(25) दादू के पंचतीर्थ निम्नानुसार है:-
(1) करडाला या कल्याणपुरा
(2) सांभर
(3) नैराणा
(4) बैराणा
(5) आमेर

(26) रामानंद गुसाई के विचारों के प्रभाव से ही संत पीपा का मन राज काज से उचट गया और वे राम-नाम स्मरण में लग गए।

(27) श्याम ने झूला-झूलने के लिए गोपी को आमंत्रित किया हैं।

(28) ग्रीष्म ऋतु के भीषण ताप के कारण ही खेतों की मिट्टी पथराई हुई थी।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(29) (i) महाकवि निराला

⇒ जीवन परिचय → छायावद के कवियों में 'निराला' उपनाम से प्रसिद्ध कवियों में कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का नाम अग्रगण्य है। कवि निराला का जन्म बंगाल के मेदिनीपुर जिले में 1898 ई. में हुआ था। इनकी औपचारिक शिक्षा हाईस्कूल तक हुई। बाद में हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी एवं बांग्ला का अध्ययन स्वयं किया। तीन साल की उम्र में माँ तथा युवावस्था के चलते-चलते पिताजी साथ छोड़कर चले गए। अंत में पुत्री सरोज ने निराला को भीतर से झकझोर दिया। इसका प्रमाण हमें उनकी रचनाओं से मिल जाता है। इनकी मृत्यु 1961 ई. में हुई।

कृतियाँ → गीतिका, परिमल, कुकुरमुत्ता, रानी और कानी, नये पत्ते, राम की शक्ति पूजा, अर्चना, आराधना आदि।

(ii) कवि देव

⇒ जीवन परिचय → रीतिकालीन कवियों में कवि देव का नाम बहुत प्रसिद्ध है। कवि देव का जन्म उत्तरप्रदेश के ईटावा में विक्रम संवत 1730 में हुआ। इसके प्रमाण संबंध में एक उक्ति प्रचलित है:-

"दौस रिया कवि देव को नगर इटावो वास"

इनके पिताजी का नाम कुछ विद्वान बिहारीलाल दुबे मानते हैं। इनकी मृत्यु वि. सं. 1824 में हुआ।

साहित्यिक परिचय → कवि देव की प्रमुख कृतियों में भावविलास, भवानीविलास, कुशलविलास, देव चरित्र,

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

अष्टयाम, सुचानविनोद, प्रेमतरंग आदि शामिल हैं। कवि देव ने शृंगार रस के प्रयोग में काफी चतुर हैं। इनके काव्यों में शृंगार रस का उचित प्रवाह मिलता है। ये शृंगारिकता छिछली नही, अपितु इसमें विशेष गंभीरता विद्यमान हैं। इस प्रकार कवि देव ऐसे कवि है जिन्होंने हिन्दी साहित्य को अमूल्य ग्रन्थ रत्न प्रदान किए।

(30) (i) एक की रास्ता संकेत।

(ii) साइकिल पथ पर निषेध है।

(iii) हॉर्न बजाना निषेध हैं।

(iv) चौडाई - सीमा।

"खण्ड - 2"

8) व्यवसायिक पत्र

शर्मा फार्मा कंपनी
देवली
दिनांक - 16-03-2019

सेवा में,
मित्तल फार्मा कंपनी
चौमू

विषय -> दवाइयाँ मँगवानें हेतु पत्र।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

आपके पत्रांक द-03/114-फा.क/2019 से ज्ञात हुआ कि आप उपयोगी दवाईयों का विक्रय करते हैं। इस कारण हम आपसे कुछ दवाईयों का क्रय करना चाहते है जो निम्नानुसार है :-

(1) एलबेन्डाजोल – 10 पैकेट

(2) ड्यूफ्लोम – 40 पैकेट

(3) सिट्रीजिन – 45 पैकेट

कृपया इन दवाइयों को शीघ्र ही भेजने की कृपा करे। इसके साथ ही इनके मूल्य की रसीद भी साथ में भेजने की कृपा करें।

सधन्यवाद

भवदीय
दवा विक्रेता
हेमांग
Hmmg

(7) निबंध - विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्व

(i) प्रस्तावना - अनुशासन का अर्थ → अनुशासन शब्द दो शब्दों के योग से बना है अनु + शासन। अनु का अर्थ होता है पीछा करना या अनुसरण करना एवं शासन का अर्थ होता है नियंत्रण रखना। इसीलिए इस शब्द का अर्थ है 'अपने आप पर संयम रखना।' अनुशासन के बिना हमारा जीवन निरर्थक एवं सारहीन हो जाता है। अनुशासन से ही व्यक्ति अपने जीवन में उचित प्रगति कर सकता है। और इसके द्वारा ही एक सभ्य समाज एवं राष्ट्र का निर्माण हो सकता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी द्वारा उत्तर

(ii) अनुशासन से लाभ, अनुशासनहीनता से नुकसान → अनुशासन भी दो प्रकार के होते हैं - आत्मानुशासन एवं बाह्यानुशासन। आत्मनुशासन का अर्थ होता है स्वयं के द्वारा अपने को काबू में रखना। तथा बाह्यानुशासन का अर्थ है किसी व्यक्ति के जोर देने पर स्वयं को अनुशासन में रखा जाना।

ये दोनो ही अनुशासन हमारे लिए काफी लाभदायक है। अनुशासन से ही एक व्यक्ति के चरित्र का निर्माण होता है। इससे समाज एवं राष्ट्र का उत्थान एवं प्रगति संभव है। विद्यार्थी जीवन में तो इसका बहुत ही ज्यादा महत्व है। विद्यार्थी अनुशासन में रहकर ही अपने लक्ष्य का निर्धारण कर सकता है। अनुशासन में रहकर ही उसे सफलता मिलती है।

यदि व्यक्ति अनुशासनहीन होता है तो उसका परिणाम भी उसे ही भुगतना पड़ता है। अनुशासन-हीन व्यक्ति कभी - भी अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकता। वह व्यक्ति हमेशा अपने जीवन में असफलता-ओं को ही प्राप्त करता है। यदि विद्यार्थी भी अनुशासन से रहित है तो उसका जीवन भी सार्थक नहीं है।

(iii) अनुशासन में रहना कैसे सीखा जा सकता है? → अब प्रश्न यह उठता है कि अनुशासन में रहना कैसे सीखा जा सकता है? हम जानते है कि इस पृथ्वी पर मनुष्यों के अलावा भी अन्य वस्तुएँ भी अनुशासन का पालन करती हैं। सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, तारें आदि भी अनुशासन का पालन करते ही है यदि ऐसा नहीं

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

होता तो यह सारी सारे जीव क्षणभर में नष्ट हो जाते। तो फिर यदि ये निर्जीव वस्तुएँ ही अनुशासन का पालन कर सकती है तो फिर यह काम तो हमारे लिए बाएँ हाथ के खेल जैसा है।

बस हमे केवल अपने पर नियंत्रण रखना जरुरी है। हमें हमेशा जल्दी समय पर उठना चाहिए। कभी भी गलत शब्दों एवं झूठे शब्दों को काम में नहीं लेना चाहिए। प्रतिदिन स्कूल जाना चाहिए। घर पर बचे हुए समय में स्वाध्याय करना चाहिए। माता-पिता एवं बड़े-बुजुर्गों का आदर करना चाहिए। हमेशा सादगी से युक्त जीवन जीना चाहिए। इनके अलावा भी अन्य कई बातें है जिनका हमें ध्यान रखना चाहिए। इन सबकी अनुपालना करने पर ही हम स्वयं को अनुशासित कह सकते हैं।

(iv) उपसंहार → प्रत्येक को मनुष्य को अनुशासन से युक्त रहकर ही कार्य करना चाहिए। विद्यार्थी जीवन में इसको अपनाने से ही हम अपनी इच्छाओं को संपूर्ण कर सकते हैं। यदि हम स्वयं ही अनुशासित नही होंगे, तो हम दूसरों से भी अनुशासित रहने की नही सोच सकते। अनुशासन युक्त जीवन ही सबसे अच्छा जीवन, इसीलि इसको हमें ख़ासकर विद्यार्थी को अपने जीवन में अवश्य उतारना चाहिए।

"समाप्त"